केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान का मिनिकोय अनुसंधान केंद्र

एम.शिवदास,
वैज्ञानिक (वरिष्ठ स्केल),
मिनिकोय अनुसंधान केंद्र

भूमिका

उत्तर अक्षांश 8° व 12° 30' और पूर्वी रेखांश 71° व 74° के बीच स्थित द्वीपों का एक समूह है लक्षद्वीप. इस में 36 द्वीप समूह व विशाल समुद्र तट शामिल है जिस में सिर्फ 10 द्वीपों में मनुष्य वास है। भूमि सिर्फ 32 वर्ग कि मी का है पर 420 वर्ग कि मी का लैगूण, 20,000 व कि मी का भूभागीय जल क्षेत्र और 400,000 व कि मी की अनन्य आर्थिक मेखला से यह समृद्ध है। मछलियों के पालन व पकड की दृष्टि से बहुत शक्य है। यह भारत में ऐसा एक क्षेत्र है जहाँ काँटा डोर व ट्रॉल लाइन के ज़रिए ट्यूना मछली की भारी पकड मिलती है।

इतिहास

लक्षद्वीप में सब से अधिक ट्यूना मिनिकॉय द्वीप से पकडी जाती है। मिनिकॉय उत्तर अक्षांश 8° 17' और पूर्व रेखांश 73°04 N के बीच स्थित है। अति पुरातन काल से यहाँ ट्यूना पकडने केलिए काँटा-डोर का उपयोग चल रहा था, यहाँ से यह रीति अन्य, द्वीपों में भी फैल गई। द्वीप के जनजीवन में मात्स्यिकी के प्रभाव को समझते हुए केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने वर्ष 1958 में यहाँ एक अनुसंधान केंद्र की स्थापना की है। 1981 तक केंद्र ने किराए मकान, पर काम किया। अब इसका अपना मकान, प्रयोगशाला व स्फुटनशाला है। कर्मचारियों के आवास केलिए 8 आवास-गृह भी इधर हैं।

मानव संपदा

कार्मिकों की संख्या 11 हैं जिन में 2 वैज्ञानिक, 2 तकनीकी सहायक, एक प्रशासनिक कर्मचारी और 6 चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी हैं ।

अनुसंधान कार्य

इस क्षेत्र की मछली संपदाओं के निर्धारण और पकड डॉटा का संकलन कार्य मुख्य काम था. माँग के अनुसार काम में ये कार्य जोडे गए है।

1. ट्यूना संपदाओं और ट्यूना पकडने केलिए उपयोग की जानेवाली चारा मछलियों के स्टॉक निर्धारण, प्रबंधन व परिरक्षण

पर अनुसंधान

2. मछली संपदाओं की उपलब्धता व प्रचुरता पर होनेवाले पर्यावरणीय व्यतियान पर अध्ययन

3. कवच मछलियों और समुद्री शैवालों का पालन

4. आलंकारिक मछलियों व चारा मछलियों के स्फुटनशाला पालन तकनॉलजी का विकास

अभी ट्यूना मछलियों के स्टाक सम्बन्धी अध्ययन तीव्र किया है। 1990 से समुद्री शैवाल संवर्धन पर अनुसंधान चल रहा है। चारा मछलियों के अभाव में कभी कभी ट्यूना मत्स्यन रुक जाता है। इसकी निरंतर आपूर्ति केलिए इस मछली को घरों में पालने व संवर्धन करने की कोशिश की जाती है।

उपलब्धियाँ

द्वीपसमूह की मछली जातों पर एक विशद अध्ययन "फिशस ऑफ द लक्षद्वीप आरचिपेलोगा" पुस्तक में प्रकाशित है। लक्षद्वीप की मछली संपदा शक्यता पर 1985 में एक बृहत् सर्वेक्षण किया। चारा मछली स्राट के अलावा अन्य चारा मछलियों की शक्यता उत्तरी द्वीपों में पहचानी गयी है । ट्यूना मछलियों की पकड पर प्राप्त डाटाओं का विश्लेषण करके वहनीय पकड पर लक्षद्वीप प्रशासन को सलाह दिया। चारा मछलियों की जीव संख्या गतिकी तैयार की गई । प्रवाल मछलियों के परिरक्षण केलिए पारिस्थितिक तंत्र नीतियाँ निर्धारित कीं। कवच मछलियों में मोती पालन केलिए मिनिकॉय लैगून अनुकूल देखा गया ।

वर्तमान कार्यकलाप

कार्यकलापों में मछलियों के पकड व पालन कार्य जुडे हुए हैं । संस्थान की 5 परियोजनाओं और 2 निधिबद्ध परियोजनाओं का कार्यान्वयन चल रहा है ।

संस्थान की परियोजनायें ये हैं:

1) मछली से जुडे हुये पारिस्थितिक प्राचलन सम्बंधी अध्ययन
2) ट्यूनाओं व ट्यूना चाराओं की मात्स्यिकी व संपदा अभिलक्षणों पर अन्वेषण
3) समुद्री मात्स्यिकी में रिमोट सेन्सिंग का प्रयोग
4) बीज उत्पादन, समुद्री झींगों के प्रयोगात्मक खेती व टैगन के सन्दर्भ में परुषकवची डिंभकों और संपदाओं पर अध्ययन
5) जीव खाद्यों के समुद्री संवर्धन

निधिबद्ध परियोजनाएं ये हैं :

1) जीवंत चारा मछलियों का प्रेरित प्रजनन व पालन
2) समुद्री आलंकारिक मछलियों का पालन